ISSN-2582-5976 www.krishakbharti.in

कुसुम उत्पादन की उन्नत तकनीक

डॉ. ब्रिजबिहारी पाण्डे
डॉ. रत्ना कुमार पसाला
पादप कार्यिकी विज्ञान विभाग, इं.गा.कृ.वि.वि., रायपुर
डॉ. आरती गुहे
वरिष्ठ वैज्ञानिक पादप कार्यिकी आई.सी.ए.आर.-आई. आई.ओ.आर. राजेन्द्र नगर हैदराबाद
डॉ. पप्पू लाल बैरवा
सब्जी विज्ञान विभाग, इं.गा.कृ.वि.वि., रायपुर (छ.ग.)

कुसुम एक औषधीय गुणों वाली तिलहनी फसल है। भारत विश्व में कुसुम का मुख्य उत्पादक देश है। इसके दानों में 30 से 32 प्रतिशत तेल पाया जाता है। यह तेल उच्च रक्तचाप तथा हृदय रोगियों के लिए लाभदायक है अन्य खाद्य तेलों की अपेक्षा कुसुम तेल में असंतृप्त वसीय अम्ल की मात्रा अधिक होती है। इसके तेल में पाये जाने वाले असंतृप्त वसीय अम्ल में 76 प्रतिशत लिनोलिक अम्ल तथा 14 प्रतिशत ओलिक अम्ल पाया जाता है।

अंकुरण के बाद प्रारम्भिक अवस्था में यह फसल तापमान-सहनशील होती है। इस अवस्था में पौधे की ऊपरी बढ़वार धीमी होती है, परन्तु जड़े काफी तेज गति से वृद्धि करती है। जिससे आगे की नमी की अवस्था में भी पौधों को पर्याप्त पानी उपलब्ध हो पाता है। इसी लिए कुसुम की खेती सिमित सिंचाई अवस्था में की जाती है। कर्षक यदि कुसुम की खेती आधुनिक तकनीक से करें, तो इसकी फसल से अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इस लेख में कुसुम की खेती वैज्ञानिक तकनीक से कैसे करें की जानकारी का उल्लेख किया गया है।

भमि की तैयारी: कुसुम की खेती करने के मध्यम काली भूमि से लेकर भारी काली भूमि उपयुक्त मानी जाती है। कुसुम की उत्पादन क्षमता का सही लाभ लेने के लिये इसे गहरी काली जमीन में ही बोना चाहिये। इस फसल की जड़ें जमीन में गहरी जाती है। कुसुम की खेती करने के लिए जल निकास का होना बेहद जरूरी होता है ज्यादा समय तक खेत में पानी ठहरने के बाद फसल खराब होने लगती है। सिंचाई पर आधारित इसकी खेती के लिए अगर मिट्टी भारी हो तो अतिरिक्त जल निकास की व्यवस्था अच्छी होनी चाहिए।

कुसुम की उन्नत किस्में

के 65: यह कुसुम की अच्छी प्रजाति है, जो 180 से 190 दिन में पकती है इसमें तेल की मात्रा 30 से 35 प्रतिशत होती है और औसत उपज 14 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

मालवीय कुसुम 305: यह भी कुसुम की अच्छी किस्म है जो 160 दिन में पकती है। इस किस्म में तेल की मात्रा 36 प्रतिशत तक पाई जाती है।

ए 300: यह किस्म 160 से 170 दिनों में पककर 8 से 9 क्विं. प्रति हेक्टेयर की औसत पैदावार देती है। इस किस्म के पुष्प पीले रंग के होते हैं तथा बीज मध्यम आकार एवं सफेद रंग के होते हैं। बीजों में 31.9% तेल पाया जाता है।

ए 1: यह किस्म भी ए- 300 के समान 160 दिनों में पककर 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत पैदावार देती है इसके बीज सफेद रंग के होते हैं तथा इसके बीजों में 30.8 प्रतिशत तेल पाया जाता है।

अक्षागिरी 59-2: इस किस्म की औसत पैदावार 4 से 5 क्विंटल प्रति हेक्टर है यह किस्म 155 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके पुष्प पीले रंग और बीज सफेद रंग के होते हैं। इसके दानों में 31 प्रतिशत तेल पाया जाता है।

जे.एस.एफ -1: यह जाति सफेद रंग के फूल वाली है। इसके पौधे काँटेदार होते हैं। इसका दाना बड़ा एवं सफेद रंग का होता है। इस जाति के दानों में 30 प्रतिशत तेल होता है।

जे.एस.आई.-7: इस जाति की विशेषता यह है कि यह काँटें रहित हैं। इसके खिले हुये फूल पीले रंग के होते है और जब सूखने लगते हैं, तो फूलों का रंग नारंगी लाल हो जाता है। इसका दाना छोटा सफेद रंग का होता है। दानों में 32 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

जे.एस.आई -73: यह जाति भी बिना काँटें वाली है। इसके भी खिले हुये फूल पीले रंग के रहते हैं और सूखने पर फूलों का रंग नारंगी लाल हो जाता है। इसका दाना जे.एस.आई -7 जाति से थोड़ा बड़ा सफेद रंग का होता है। इसके दानों में तेल की मात्रा 31 प्रतिशत होती है।

बुआई का समय एवं विधि: कुसुम की बुआई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के पहले सप्ताह तक अवश्य कर दें अन्यथा अधिक ठंड पड़ने से अंकुरण पर बुरा असर पड़ता है। पौधे से पौधे की दूरी 15 सेमी और पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेमी रखें। बीज को 5-7 सेमी की गहराई पर बोयें। बुवाई ड्रिलिंग विधि से की जाती है।

बीज दर: 18-20 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

बीजोपचार: मिट्टी से होने वाली बीमारियों से बचाव के लिए बुवाई से पहले प्रति एक किलोग्राम बीजों को थायरम 3 ग्राम या कैप्टन 2 ग्राम या कार्बडाजिम 2 ग्राम की दर से बीजोपचार करना चाहिए।

खाद और उर्वरक: सही और संतुलित रूप में उर्वरक देने के लिए बुवाई के 2-3 सप्ताह पहले 2 टन प्रति एकड़ के हिसाब से सड़ी गोबर की खाद को खेत में डालना चाहिए। उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण के आधार पर करें अन्यथा 40 किलोग्राम नाइट्रोजन, 20 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से अधिक लाभकारी होता है।

सिंचाई प्रबंधन: यह एक सूखा सहनशील फसल है अतः यदि फसल का बीज एक बार उग आये तो इसे फसल कटने तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन जहाँ सिंचाई उपलब्ध हो, वहां, अधिकतम दो सिंचाई कर सकते हैं। प्रथम सिंचाई 50 से 55 दिनों पर (बढ़वार अवस्था) और दूसरी सिंचाई 80 से 85 दिनों पर (शाखायें आने पर) करना उचित होता है।

निराई-गुड़ाई: कुसुम की फसल में एक या दो बार आवश्यकतानुसार हाथ से निराई-गुड़ाई करें। निराई-गुड़ाई करने से जमीन की उपरी सतह की पपड़ी टूट जायेगी। यदि दरारे पड़ रहीं हो तो वह भर जायेगी और नमीं के ह्रास की बचत होगी। निदाई-गुड़ाई अंकुरण के 15-20 दिनों के बाद करना चाहिये एवं हाथ से निराई-गुड़ाई करते समय पौधों का विरलन भी हो जायेगा। एक जगह पर एक ही स्वस्थ पौधा रखना चाहिये।

फसल कटाई: कांटेवाली जाति में काँटो के कारण फसल काटने में थोड़ी कठिनाई जरुर आती है। काँटेवाली फसल में पत्तों पर काँटें होते हैं। तने कांटे रहित होते हैं। बाँये हाथ में दास्ताने पहनकर या हाथ में कपड़ा लपेटकर या तो दो शाखा वाली लकड़ी में पौधों को फंसाकर दराती से आसानी से फसल कटाई कर सकते हैं। काँटे रहित जातियों की कटाई में कोई समस्या नहीं हैं। कुसुम फसल की कटाई हार्वेस्टर से भी करते हैं

उपज

असिंचित अवस्था: 1100 से 1200 किलोग्राम प्रति हे.
सिंचित अवस्था: 1500 से 1600 किलोग्राम प्रति हे.

भण्डारण: कुसुम क0 सुखाने के बाद बीजों का भण्डारण करना चाहिए। कुसुम के औषधीय गुण कुसुम का बीज, छिलका, पत्ती, पंखुड़ियाँ, तेल, शरबत सभी का उपयोग औषधि के रूप में किया जा सकता है। कुसुम का तेल भोजन में उपयोग करने पर कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम रहती है एवं तेल से सिर दर्द में भी आराम मिलता है। इसके शरबत का उपयोग बदन दर्द में किया जाता है मांसपेशियों की चोट, कलाई में दर्द, हड्डियों में दर्द, घुटने में दर्द में भी इससे इलाज किया जाता है कुसुम की पंखुड़ियों से बनी चाय का उपयोग औषधि के रूप में तथा शक्तिवर्धन के रूप में किया जाता है मानसिक रोगों में भी कुसुम के रस से उपचार किया जाता है।